International Journal of Physical and Social Science
Vol. 8 Issue 4, April 2018,
ISSN: 2249-5894 Impact Factor: 6.644
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

राम जीवन शर्मा 'जीवन' की कविताओं में हास्य–व्यंग्य के विविध आयाम

राकेश कुमार कश्यप
UGC NET (हिन्दी)
मगध वि0 बोधगया

हिन्दी हास्य–व्यंग्य की दीर्घ परंपरा में 'जीवन' जी अमूल्य धरोहर हैं। आज का मंचीय कवि हो या विषुद्ध व्यंग्यकार 'जीवन' जी उसके निर्माण की अनिवार्य ईंट हैं। हास्य–व्यंग्य का बहुआयामी स्वरूप और उसकी रचना धर्मिता उन्हें अग्रपांक्तेय कवि के रूप में स्थापित करती है। उनकी कविताओं में व्यंग्य के कई स्तर हैं। जिसे निम्न बिन्दुओं के आधार पर समझा जा सकता हैः–

(1.) **वैयक्तिक व्यंग्यः–**

(क) आत्मपरक

हास्य–व्यंग्य के क्षेत्र में आत्मपरक व्यंग्य का अपना अलग महत्त्व है। व्यंग्यकार की यह विषेषता रही है कि कमी अगर स्वयं में भी रहे तो प्रहार करने से बाज नहीं आता। उसकी यही खासियत न सिर्फ अलग पहचान देती है अपितु महान भी बनाती है। दूसरे को केन्द्र में रखकर किया गया व्यंग्य पक्षपात की श्रेणी में आ सकता है। इसके विपरीत आत्मस्थ व्यंग्य पर उँगली नहीं उठ सकती। 'जीवन' जी इस तरह के लेखन के सफल कवि माने जाते हैंः–

"कीजिए मुझको वोट प्रदान
मुझे वोट देने से होगा, सब प्रकार कल्याण
हैं जितने उम्मीदवार उन सबको अपना ध्यान
परहित चिंतन निषिदिन करते केवल मेरे प्राण
प्रभु से यही विनय करता हूँ मैं उठ साँझ–विहान
खायें पियें चैन से सोयें सब मजदूर–किसान
निरभिमान मुझ सदृष मिलेगा भला कौन धनवान
द्वार–द्वार यों कौन फिरेगा, सबको समझ समान
कीजिए मुझको वोट प्रदान"[1]

उपर्युक्त पंक्तियाँ 'वोट की भीख' शीर्षक कविता से निःसृत है। राजनेताओं के द्वारा वोट के लिए हर तरह का वादा आज आम है। जनहित की बात सदा करने वाले ये बगुला भगत नेता आजीवन अपनी जेब भरने में लगे रहते हैं।

आत्मस्थ का सहारा लेकर ढोल की पोल खोलने वाले सफल कवियों में आप अप्रतिम हैं। 'द्वार पर दरबान भी है', 'ताक धिना धिन', 'झंडा ऊँचा सदा हमारा' इत्यादि कविताएँ आत्मपरक वैयक्तिक व्यंग्य का सुंदर उदाहरण है।

(ख) परस्थः–

आत्मस्थ व्यंग्य की अपेक्षा परस्थ व्यंग्य का दायरा बहुत बड़ा है। दूसरों के ऊपर हास्य–व्यंग्य मनुष्य की स्वभावगत विषेषता है। किन्तु इसमें एक बात का ध्यान रखना पड़ता है। पूर्वाग्रह या दुराग्रह से ग्रसित होने पर व्यंग्य की सफलता समाप्त हो जाती है और वह सिर्फ वैयक्तिक आपेक्ष बनकर रह जाती है। जो समाज तथा साहित्य का सजग प्रहरी हो उससे चूक की गुंजाईष भला कैसे हो सकती है? केन्द्रीय सत्ता में हो रहे परिवर्त्तन और राजनीतिक छीछालेदार पर टिप्पणी करते हुए 'जीवन' जी लिखते हैंः–

"क्या यही कि कुर्सी पर बैठें इंदिरा की जगह देसाई
क्या यही कि सत्ता की छीना–झपटी में हो हाथापाई
क्या यही कि चुस्त पजामा हम पहनें तजकर अपनी धोती
क्या यही कि आकर्षित कर ले हमको भी हीरा औ मोती
यदि बात यही है तो मित्रों, यह भूल हमारी है भारी
बेहतर है भूल भुलाकर यह हम करें क्रांति की तैयारी"[2]

यहाँ दो बड़े नाम अथवा दो बड़ी विचारधारा 'इंदिरा' और 'देसाई' का नाम आया है। यहाँ कवि का लक्ष्य व्यक्ति नहीं बल्कि व्यवस्था है। व्यक्ति के रूप में किसी का चेहरा स्थापित कर दिया जाए व्यवस्था यथावत बनी रहती है। 'क्राति का आह्वान' उसी को लक्ष्य कर लिखी गई कविता है।

(2.) साहित्यिक व्यंग्यः–

रामजीवन शर्मा 'जीवन' का साहित्यिक सफर छायावाद से समकालीन कविता तक निर्बाध चलता रहा। साहित्य की अविराम सेवा बिना मोल भाव के करने वाले 'जीवन' जी को उपेक्षा का दंष बराबर झेलना पड़ा। वे देख रहे थे कि खोटे सिक्के भी मुँह माँगा दाम पर बिक रहे हैं और दूसरी तरफ अच्छे को परखने वाला कोई नहीं है। इसके प्रति चुटीला व्यंग्य करते हुए 'जीवन' जी लिखते हैंः–

"अब बिना गुट बनाए गुजारा नहीं।
निर्दल या तटस्थ व्यक्ति को देता भाई भी सहारा नहीं
राजनीति में बढ़ने के लिए तो गुट चाहिए
साहित्य में भी बिना इसके चमक सकता सितारा नहीं
.....
इसी कारण इस बुढ़ापे में मैं भी गुट का शौकीन हो गया हूँ
तन भले ही पुराना पड़ गया है पर मन से नवीन हो गया हूँ
खैरियत है कि पुराने गुटबाज दोस्तों ने
अब तक मुझे बिसारा नहीं।"[3]

यह सर्वविदित है कि साहित्य में सभी अपनी–अपनी गोटी तथा अपना–अपना स्थान तय करने में लगे थे। ऐसा करने में असमर्थ रहने वालों के लिए न तो इसमें जगह है न ही जरूरत है साहित्यिक गुटबाजों के लिए यह बहुत ही सुंदर पंक्ति है। साहित्यिक व्यंग्य के और भी कई उदाहरण उनकी रचनाओं में मिलते हैं जिसे सम्पूर्णता के साथ 'काव्य समग्र' में देखा जा सकता है।

(3.) धार्मिक व्यंग्य–

हास्य–व्यंग्यकार हर तरह की सीमाओं से परे होता है। चाहे कोई भी क्षेत्र क्यों न हो उसकी सषक्त लेखनी हर जगह पहुँचती है। राजनीति में गहरी पैठ बनाने वाले 'जीवन' जी धार्मिक विसंगति पर चुप नहीं बैठते। विषुद्ध धार्मिक संस्कार में पले–बढ़े रामजीवन शर्मा 'जीवन' धार्मिक आस्था पर तो दृढ़ता से कायम रहते हैं किन्तु ब्राह्मणों की परिपाटी पर चुप नहीं बैठते। भक्त और भगवान के बीच वे सीधा संवाद चाहते हैं, माध्यम को सीधे तौर पर ठुकराते हुए कहा हैः–

"कहने दो खुद लोक को, प्रभु से अपना हाल
पंडित जी! तुम बीच में बनते व्यर्थ दलाल
नाम बेचकर आपका, भरते जो निज धाम
भगवन् जल्दी कीजिए, उनका काम तमाम"[4]

ईष्वर के प्रति अनन्य आस्था रखने वाले 'जीवन' जी को ब्राह्मणों को दोहरा चरित्र स्वीकार नहीं था, एक तरह भक्त जनों को अहिंसा का पाठ पढ़ाते और स्वयं आठों याम हिंसा में निमग्न रहते। इसी व्यवहार को लेकर तीखा व्यंग्य है, जिसे 'जीवन' जी ने उठाया है।

(4.) सामाजिक व्यंग्यः–

समाज और राजनीति ही वह आधारषिला है जिस पर 'जीवन' जी ने मजबूत इमारत खड़ी की है। राजनीतिक रूचि एवं सामाजिक पैठ ने उनके व्यंग्य का आधार प्रदान किया है। समाज का शोषणवादी स्वरूप और उसकी दिषाहीनता को 'जीवन' जी ने आड़े हाथों लिया है। जो मेहनतकष हैं उन्हें हर चीजों से वंचित रखने का खेल सहस्र सताब्दियों पुराना है। यातना की अनंत ज्वाला जब आकाषगामी बनती है तब 'चरवाहा' जैसे कविता का सृजन होता है। द्रष्टव्य है निम्न पंक्तियाँ :–

"यह लड़का गाय चराता है
पर जरा पूछिए तो इससे
क्या दूध–दही भी पाता है?
प्रातः उठ घर से आता है
सीधे बथान में जाता है
गोबर निकाल उस पषु निवास
को सुथरा साफ बनाता है
फिर चना चबेना शकरकन्द
जो कुछ मालिक से पाता है

'बसिया' में उसे सहर्ष ग्रहण
कर, बड़े शौक से खाता है
यह लड़का गाय चराता है"[5]

आखिर कवि की चिंता लाजिमी है। जिस चीज को जो अर्जित करे, उसी से वंचित रहना पड़े। नियति का यह खेल कितना सुंदर है। गाय चराने वाला दूध से वंचित, अन्न उपजानेवाला अन्न से वंचित, मकान का निर्माण करनेवाला आवास से वंचित है। समाज की यही विडंबना 'जीवन' जी को स्पंदित कर देती है। संवेदनषील कवि हर दृष्टिकोण से सोचता है। उसके जिम्मेदार पहलू कौन–कौन हैं इस ओर भी उनकी सूक्ष्म दृष्टि गई हैं दूसरों को कोसते रहने से क्या हासिल होगा? दूसरों की सीमा को छोड़ आत्म सजगता भी बड़ी चीज है, इस ओर भी ध्यान देने की आवष्यकता है। 'जीवन' जी का व्यंग्यकार आपसी झगड़ों को रेखांकित करते हुए कहता है :–

"अनुषासन की आग
न जब तक वहाँ जलेगी
न्याय–नीति तब तक न
वहाँ पर आश्रय लेगी
और तभी सुख–षांति
ष शांति से फैल सकेगी
लक्ष्मी भी आषीष
तभी गाँवों को देगी।"[6]

इसी तरह और भी कई सामाजिक मुद्दे उनकी रचनाओं में प्रमुखता से स्थान पाते हैं। परिवार नियोजन, नारी में आई विच्छृखंलता, पाष्चात्य संस्कृति का दुष्प्रभाव जैसे मुद्दे को भी 'जीवन' जी पूरी षिद्दत के साथ उठाते हैं। समाज के विकास की मूल अवधारणा उसकी मौलिकता में है, अनुकरण में नहीं। इसी सामाजिक सच को 'जीवन' जी ने उठाया है।

(5.) राजनीतिक व्यंग्यः–

'जीवन' जी के राजनीतिक व्यंग्य को रेखांकित करते हुए हिन्दी के लब्धप्रतिष्ठ आलोचक डॉ0 नंद किषोर 'नवल' लिखते है।, " 'जीवन' जी का सबसे शानदार काव्य राजनीतिक हास्य–व्यंग्य वाला है। इसे स्वातंत्र्योत्तर भारत का आईना कहना चाहिए, जिसमें सारे चेहरे प्रतिबिंबित हैं– नेता, जनता, अफसर, चोर बाजारी आदि सब के। .....'जीवन' जी अपनी कविताओं में उसकी एक–एक परत उधेड़कर रखते हैं, जिसे देखकर ऊपर से हँसी आती है और भीतर से रोना।"[7] स्वातंत्र्योत्तर भारत में जनता की तकदीर–तस्वीर तथा राजनेताओं की तकदीर–तस्वीर में क्या कुछ बदलाव हुआ था? जिनके पास कुछ नहीं था उनके पास क्या कुछ नहीं है। जो कभी हमदर्द थे वही आज बेदर्द बन गए हैं। जो सत्ता से लड़ते थे आज वही सत्ता के लिए लड़ते हैं। राजनीति का हर चेहरा बेनकाब किया है। 'तीसमार खाँ', 'मंत्री जी की आज अवाईः 'छींटाकषी', 'अट्टहास' इत्यादि राजनीतिक

हास्य–व्यंग्य को अग्रिम सोपान प्रदान करता है। राजनेताओं की स्थितियों में आए बदलाव को 'जीवन' जी कुछ इस रूप में रेखांकित करते हैं:–

"कलुआ कल बोल न पाता था
अब घंटों लेक्चर देता है
मल्हुआ यों ऐंठ–ऐंठ चलता
मानो वह विष्व–विजेता है

ललुआ लेखों के साथ–साथ
अब लिखने लगा कहानी भी
हर माह रेडियो के द्वारा
सुन पड़ती उसकी वाणी भी

मुझ सा कवि उसका नौकर है,
मल्हुआ भी आज मिनिस्टर है।"[8]

'मुझ–सा 'कवि' ब्रह्मराक्षस के 'बौद्धिक वर्ग है। कृतदास की याद दिलाता है। बुद्धिजीवी वर्ग किस तरह राजनेताओं की इच्छाओं के गुलाम हैं इसे हर कोई जानता है। वह वही सोचता–बोलता करता है जो राजनेता चाहते हैं।

राजनीति केन्द्रित व्यंग्य में 'जीवन' जी अद्वितीय हैं। इस तथ्य की पुष्टि आलोचक प्रवर प्रो0 (डॉ0) नंद किषोर नवल भी करते हैं, "वे मूलतः राजनीतिक कवि थे, एक विद्रोही राजनीतिक कवि, जो स्वाधीनता–प्राप्ति के बाद हास्य–व्यंग्य का सहारा लेकर लगातार कांग्रेस के जन–द्रोही नेताओं के असली रूप को उजागर करते रहे। उनका हृदय जनता के प्रति प्रेम और दायित्व की भाव से लबालब था। यही वह चीज है जो उन्हें शुद्ध हास्य रस के कवियों से अलग हिन्दी के उन गंभीर राजनीतिक कवियों की पंक्ति में खड़ा कर देती हैं।"[9]

संदर्भः–

1. काव्य समग्र, सम्पादक, डॉ0 नन्द किषोर 'नवल', सारांष प्रकाषन, दिल्ली, प्रथम संस्करण 1996, पृ0– 134
2. वही .....पृ0–222
3. याद पुरुषों की, राम जीवन शर्मा 'जीवन' प्रकाषक–राम जीवन शर्मा, मरबन, मुजफ्फरपुर, प्र0 संस्करण सवत् 2045, वि0 पृ0–46,47
4. काव्य समग्र, सम्पादक, डॉ0 नन्द किषोर 'नवल', सारांष प्रकाषन, दिल्ली, प्रथम संस्करण 1996, पृ0– 449
5. करमी के फूल, राम जीवन शर्मा 'जीवन' भूषण प्रकाषन, मुजफ्फरपुर, प्र0 संस्करण संवत् 2018, पृ0–52, 53
6. ग्राम सेवक, पत्रिका, अगस्त 1955

7. काव्य समग्र, सम्पादक, डॉ0 नन्द किषोर 'नवल', सारांष प्रकाषन दिल्ली, प्र0 संस्करण 1996, जीवन की कविताई, पृ0–31
8. छींटाकषी, राम जीवन शर्मा 'जीवन' भूषण प्रकाषन मुजफ्फरपुर, पं0 सस्करण संवत् 2025, पृ0–40
9. काव्य समग्र, सम्पादक, डॉ0 नन्द किषोर 'नवल', सारांष प्रकाषन दिल्ली, प्र0 सस्करण 1996, जीवन की कविताई, पृ0–36